Tel. : 9342254131

ओ३म्

Email : aryasamajmarathalli@yahoo.co.in
www.bangalorearyasamaj.com

स्वामी दयानन्द सरस्वती

आर्य ज्योति
ARYA JYOTI
ಆರ್ಯ ಜ್ಯೋತಿ

December-2024

Arya Samaj Marathalli Monthly Newsletter

Sunday Weekly Satsang : 10.00 a.m. to 11.30 a.m.

मातृ–पितृ भक्त, समाजसेवी, परोपकारी, मानवता के पुजारी एवं ईश्वर भक्त
श्री विमल वधावन योगाचार्य जी संन्यास लेकर बनें स्वामी भक्तानन्द सरस्वती
आर्य समाज एवं विश्व को मिला तेजस्वी आर्य संन्यासी – फकीरे दयानन्द (एस.पी. कुमार)

मातृ–पितृ भक्त, ईश्वर भक्त, समाजसेवी, परोपकारी जीवन, मानवता के पुजारी श्री विमल वधावन एडवोकेट जी का जन्म दिनांक 13 जनवरी, 1962 को माता श्रीमती स्वर्णकान्ता जी पिता श्री सुरेन्द्रनाथ वधावन जी के परिवार में हुआ। श्री विमल जी बचपन से ही बड़े–बुजुर्गों के सम्मान तथा ईश्वरभक्ति में लीन रहते थे। उन्हें यह सब संस्कार माता–पिता के पुण्य कर्मों से प्राप्त हुआ है। इनका जीवन पूर्ण रूप से सादगी भरा जीवन रहा है। श्री विमल वधावन जी ने उच्च शिक्षा प्राप्त करने के बाद वकालत की डिग्री हासिल की और सर्वोच्च न्यायालय के वकील बनें, परन्तु ये कभी भी पैसों के पीछे नहीं भागे और अपना पूरा जीवन समाजसेवा, परोपकार तथा ईश्वरभक्ति में लगाये रखा।

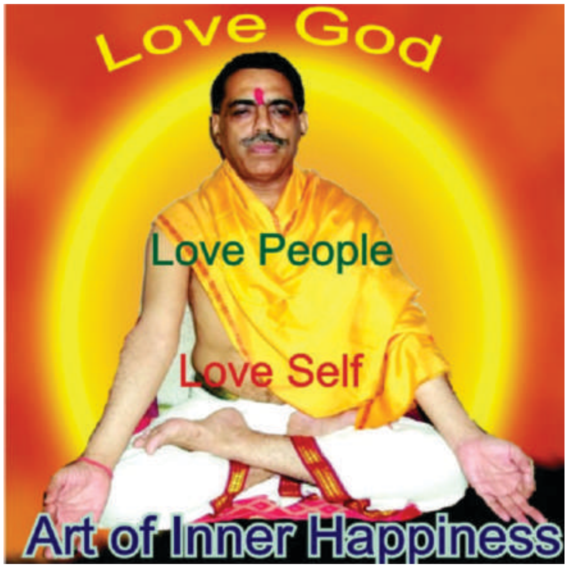

शिक्षा–दीक्षा के उपरान्त माता–पिता ने एक सुयोग्य कन्या कुमारी पूनम वधावन जी के साथ इनका विवाह कर दिया। विवाह के उपरान्त इन्हें दो सुपुत्री प्राप्त हुई। परन्तु वैवाहिक जीवन के थोड़े ही समय में कम उम्र में धर्मपत्नी का अचानक देहावसान हो गया। धर्मपत्नी के अचानक चले जाने के बाद भी इन्होंने अपनी दो छोटी–छोटी बच्चियों के पालन–पोषण में कोई कसर नहीं छोड़ी और उन्हें उच्च शिक्षित–दीक्षित और संस्कारित करने में लगे रहे और इस कार्य में इनकी माता जी का योगदान अकथनीय एवं सराहनीय है। श्री विमल जी की माता उच्च शीक्षित थीं, उन्होंने अपने सुपुत्र के वैदिक कार्यों में पूर्ण सहयोग एवं समर्थन किया करती थीं। माता जी का व्यवहार एवं परोपकार का भाव पूरी मानवता के लिए एक अनुपम उदाहरण है। वह सही मायने में सर्वमाता थीं। माता जी के दरवाजे जो भी जाता था उसे माता जी अपने हाथों से स्वादिष्ट भोजन प्रसाद अवश्य ग्रहण कराती थीं। माता जी ने कई बार प्रयास किया कि उनका बेटा दूसरी शादी कर ले, क्योंकि बच्चियाँ बहुत छोटी थीं। श्री विमल जी चाहते तो पुनर्विवाह कर सकते थे, परन्तु इन्होंने ऐसा नहीं किया और अपना पूरा जीवन समाज एवं राष्ट्र के लिए समर्पित करते हुए पारिवारिक दायित्वों को पूरा करके अब पूर्ण रूप से समाज एवं राष्ट्र सेवा में अपने आपको समर्पित कर दिया है।

अपनी बेटियों का विवाह पूर्ण वैदिक रीति एवं महर्षि दयानन्द जी द्वारा बताये गये संस्कारों के अनुरूप करके एक

शेष पृष्ठ 8 पर

स्वतन्त्रता सेनानी स्वामी श्रद्धानन्द

– डॉ. महावीर प्रसाद

संस्कृत के नीतिकारों ने महात्माओं और दुरात्माओं का अन्तर निरूपित करते हुए कहा है-

मनस्येकं वचस्येकं कर्मण्येकं महात्मनाम्।

मनस्यन्त् वचस्यन्यद् कर्मण्यन्यद् दुरात्मनाम्।।

अर्थात् मन, वचन और कर्म में एकता महात्माओं की पहचान है तो मन, वचन, कर्म में भिन्नता दुरात्माओं का लक्षण है। इस कसौटी पर कस कर देखें तो युगप्रवर्तक महर्षि दयानन्द और स्वयं को ऋषि का शिष्य कहने में गर्व अनुभव करने वाले और उनकी प्रेरणा से ही कुपथ से निकलकर सुपथ पर चलने वाले स्वामी श्रद्धानन्द अनुपम और अद्वितीय थे। देव दयानन्द ने न जाने कितनी पतित आत्माओं का उद्धार किया और उन्हें इतिहास में स्मरणीय बनाया, इसकी गिनती करना कठिन है। अपने आचार्य के इस स्वरूप को श्रद्धापूर्वक स्मरण करते हुए स्वामी श्रद्धानन्द ने लिखा था-

''ऋषिवर, तुम्हें भौतिक शरीर त्यागे अब (सन् 1925 में) 42 वर्ष हो चुके, परन्तु तुम्हारी दिव्यमूर्ति मेरे हृदयपटल पर अब तक ज्यों की त्यों अंकित है। मेरे निर्बल हृदय के अतिरिक्त कौन मरणधर्मा मनुष्य जान सकता है कि कितनी ही बार गिरते-गिरते तुम्हारे स्मरण मात्र ने मेरी आत्मिक रक्षा की है। तुमने कितनी ही आत्माओं की काया पलट की, इसकी गणना कौन मनुष्य कर सकता है। परमात्मा के बिना, जिनकी पवित्र गोद में तुम इस समय विचर रहे हो, कौन कह सकता है कि तुम्हारे उपदेशकों से निकली हुई अग्नि ने संसार में प्रचलित कितने पापों को दग्ध कर दिया, परन्तु अपने विषय में मैं कह सकता हूँ कि तुम्हारे सहवास ने मुझे कैसी गिरी हुई अवस्था से उठाकर सच्चा जीवन-लाभ करने योग्य बनाया। भगवान् मैं तुम्हारा ऋणी हूँ। मुझे अपना सच्चा शिष्य बनने की शक्ति प्रदान करें।''

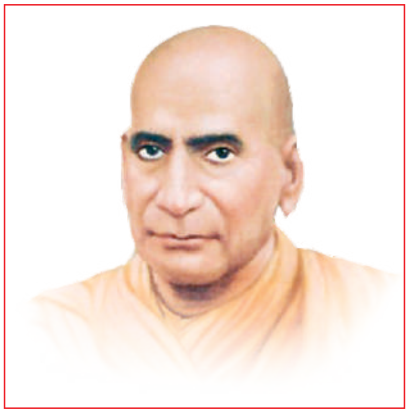

स्वामी श्रद्धानन्द की कथनी और करनी में कैसी एकरूपता थी, इसके अनेक उदाहरण उनके जीवन से दिये जा सकते हैं।

मानवता, सात्विकता, समर्पण, त्याग, सेवा के साकार स्वरूप स्वामी श्रद्धानन्द का जीवन बहु-आयामी था। हिमालय के चरणों में भगवती भागीरथी के पावन तट पर गुरुकुल कांगड़ी में वैदिक ज्ञान का अक्षय वट वृक्ष लगाने वाले इस महान् संन्यासी ने भारत के स्वातन्त्र्य समर में भी महान् सेनापति की भूमिका सफलतापूर्वक निभाई थी।

सत्याग्रह और अहिंसा के बलपर देश को स्वतन्त्र करने का महान् संकल्प लेकर अपना जीवन समर्पित कर देने वाले महात्मा गांधी के साथ महात्मा मुंशीराम का अटूट प्रेम का सम्बन्ध था। महात्मा गांधी को 'महात्मा' के सम्बोधन से सर्वप्रथम सम्बोधित करने वाले महात्मा मुंशीराम ही थे। उसके बाद तो महात्मा गांधी के साथ 'महात्मा' शब्द ऐसे चस्पा हो गया जैसे कि वह 'गांधी' का पर्यायवाची ही हो। महात्मा गांधी उनको हमेशा अपने बड़े भाई का सा आदर देते थे। जब गांधी जी पहली बार दक्षिण अफ्रीका से भारत आये थे तो अपने आश्रमवासी छात्रों के साथ सीधे गुरुकुल कांगड़ी ही पहुंचे थे और वहां जाकर उन्होंने महात्मा मुंशीराम का चरण स्पर्श किया।

स्वामी श्रद्धानन्द का नाम जहां गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना के कारण विश्व इतिहास में अमर है, वहां स्वाधीनता आन्दोलन का इतिहास भी स्वामी जी के योगदान की चर्चा के बिना अधूरा है। दक्षिण अफ्रीका में महात्मा गांधी ने प्रवासी भारतीयों के अधिकारों के प्राप्ति के लिए सत्याग्रह प्रारम्भ किया और आर्थिक सहयोग की अपील की। इस अपील पर स्वर्गीय गोखले चन्दा एकत्र करने के काम में लग गये। गांधी जी की अपील का गुरुकुलवासियों पर इतना प्रभाव पड़ा कि ब्रह्मचारियों एवं अध्यापकों ने अपने भोजन में कमी करके इससे होने वाली आय के अतिरिक्त हरिद्वार के समीप बनने वाले 'दूधिया बांध' पर पत्थर तोड़ने और मिट्टी डालने की मजदूरी करके पन्द्रह सौ रुपया श्री गोखले के पास भेज दिया। इस सम्बन्ध में श्री गोखले ने 27 नवम्बर, 1913 को महात्मा मुंशीराम को जो पत्र लिखा था वह पठनीय है-

''मुझे रेवरेण्ड एण्ड्रूज और पंडित हरिश्चन्द्र ने बताया कि किस प्रकार गुरुकुल के ब्रह्मचारी दक्षिण अफ्रीका के लिए घी-दूध छोड़कर और साधारण कुलियों और मजदूरों की तरह मजदूरी करके रुपया इकट्ठा कर रहे हैं। दिल हिलाने वाले इस देशभक्तिपूर्ण कार्य के लिए मैं उनको क्या धन्यवाद दूं। यह तो उनका वैसे ही अपना काम है, जैसा कि आपका और मेरा काम है। वे इस प्रकार भारत माता के प्रति अपने ढंग से कर्त्तव्य का पालन कर रहे हैं। फिर भी भारतमाता की सेवा के लिए त्याग और श्रद्धा का जो आदर्श उन्होंने देश के युवकों तथा वृद्धों के सामने उपस्थित किया है, उसकी अन्तःकरण से प्रशंसा किये बिना मैं नहीं रह सकता।''

20 मार्च सन् 1919 को अहमदाबाद में स्वामी श्रद्धानन्द द्वारा दिये गये ऐतिहासिक भाषण को सुनकर वायसराय चैम्सफोर्ड घबरा गये।

'मार्शल ला' से भयभीत कराहते हुए पंजाब को देखकर भी वीर संन्यासी का हृदय शांत न रह सका। प्रेम और सहानुभूति के 'फाहे' को उनके जरकी हृदय पर रखने के लिए 1919 के कांग्रेस अधिवेशन के स्वागताध्यक्ष के रूप में इस संन्यासी ने अपने आर्यत्व का संदेश दिया था।

जलियावाला काण्ड के पश्चात् क्षत-विक्षत पंजाब अत्याचारों की पीड़ित वेदना से आहत हो चुका था। कोई साहस नहीं कर पा रहा था कि पंजाब की धरती पर पुनः स्वतन्त्रता की मशाल जला सके, ऐसे में प्रभु-भक्त स्वामी श्रद्धानन्द ही सामने आये और निर्भीकता के साथ वेदमन्त्रोच्चारण पूर्वक राष्ट्र-भाषा हिन्दी में कांग्रेस के स्वागताध्यक्ष के रूप में ऐतिहासिक भाषण दिया।

इस भाषण के सम्बन्ध में महात्मा गांधी ने कहा था ''श्रद्धानन्द का भाषण उच्चता, पवित्रता, गम्भीरता और सच्चाई का नमूना था। वक्ता के व्यक्तित्व की छाप उसमें आदि से अन्त तक बनी हुई थी।

सन् 1919 का वर्ष स्वामी जी के जीवन-इतिहास का एक अद्वितीय वर्ष था। 30 मार्च का दिन दिल्ली की प्रत्येक दुकान और व्यावसायिक प्रतिष्ठानों में सर्वत्र सन्नाटा और शांति। यह शांति मरघट की शांति न होकर स्वदेश प्रेम की

अनुपम शालीनता धारण किए हुए थी। स्वामी जी के नेतृत्व में एक विशाल परन्तु शांत जलूस चांदनी चौक में निकला जब वह जुलूस घंटाघर पर पहुंचा तो कुछ गोरखा सिपाहियों ने हवाई फायर किये। स्वामी जी गोरखा सिपाहियों की ओर बढ़े, हवाई फायरिंग का कारण पूछा। परन्तु कुछ सिपाहियों ने आगे बढ़कर अपनी बन्दूकों का मुख स्वामी जी की ओर कर दिया। तब उस वीर, निर्भीक, देश-प्रेमी आर्य संन्यासी ने अपने सीने से वस्त्र हटाकर सिंह गर्जना करते हुए कहा था- 'लो मैं खड़ा हूँ, मारो गोली। अहा! यह दृश्य कितना आकर्षक था, कितना वीरतापूर्ण था। स्वामी जी उमड़ते हुए जन-समुद्र को अपने नेतृत्व में चांदनी चौक में से ले जा रहे थे, तो ठीक घंटाघर पर ब्रिटिश सिक्कों पर पलने वाले कुछ भारतीय सैनिकों ने उस आदर्श राष्ट्र-प्रेमी वीर विनायक को रोकना चाहा। जब वे उनकी हवाई फायरिंग की परवाह न करते हुए सिंह समान अपने मार्ग पर बढ़े जा रहे थे, तो ठीक घंटाघर पर कुछ सैनिकों की चमचमाती संगीनें लोगों की ओर निकल पड़ी। स्वामी जी ने गरजते हुए कहा- 'जनता पर गोली चलाने से पूर्व मेरी छाती में गोली मारो।'

स्वामी जी के निर्भीक व्यक्तित्व ने संजीवनी औषधि का कार्य किया और दिल्लीवासियों ने धर्म और जाति के भेद-भाव के बिना उन्हें नवचेतना का मसीहा मान लिया। राजनीति के क्षेत्र में स्वामी जी का पहला चरण इतना सशक्त था, जिसने सबको चमत्कृत कर दिया था।

हिन्दू मुस्लिम एकता के पक्षधर

स्वामी जी हिन्दू-मुस्लिम एकता के प्रबल पक्षधर थे। वे हम एक हैं की व्याख्या 'ह' से हिन्दू और 'म' से मुस्लिम किया करते थे। वे व्याख्यान देकर नहीं अपितु प्रत्यक्ष आचरण द्वारा एकता स्थापित करना चाहते थे।

4 अप्रैल के दिन दोपहर बाद की नमाज के पीछे विश्व की प्रसिद्ध जामा मस्जिद में मुसलमानों का जलसा हो रहा था। भीड़ में से मौलाना अब्दुल्ला चूड़ीवाले ने अचानक आवाज देकर कहा- ''स्वामी श्रद्धानन्द की तकरीर भी होनी चाहिए। दो-तीन उत्साही युवक उठे और स्वामी जी को नये बाजार के निवास से लाए। अल्ला हो अकबर के नारों के साथ स्वामी जी मस्जिद के मिम्बर (बेदी) पर विराजमान हुए। स्वामी जी ने 'त्वं हि नः पिता वसो त्वं माता शतक्रतो बभूविथ। अथा ते सुम्नमीमहे।' इस वेद मन्त्र से प्रारम्भ कर 'ओं शांतिः शांतिः शांतिः' कहकर व्याख्यान समाप्त किया। विश्व के इतिहास में यह पहला अवसर था। जब किसी गैर मुस्लिम ने दिल्ली की जामा-मस्जिद में खड़े होकर इस प्रकार वेदोपदेश दिया हो। इस घटना से वे धर्म और जाति की संकीर्णताओं से ऊपर उठकर मानव से महामानव और अजातशत्रु बन गये थे।

वे सच्ची धर्म निरपेक्षता के समर्थक थे। आपने एक बार लिखा था कि भिन्न-भिन्न धर्म तथा सम्प्रदाय भी देश में राजनैतिक और सामाजिक एकता उत्पन्न करने में बाधक नहीं हो सकते और इकत्तीस करोड़ भारतवासी देश में सच्ची राष्ट्रीयता स्थापित कर सकते हैं। सनातन धर्मी, आर्यसमाजी, ब्राह्म, जैन, बौद्ध, पारसी, मुसलमान, ईसाई और यहूदी आदि सब अपने ढंग से पूजापाठ करते हुए भी भारतमाता की पूजा में एक होकर भ्रातृवाद का संगठन पैदा कर सकते हैं।

दलितोद्धारक

स्वामी श्रद्धानन्द दलितोद्धार के लिए अत्यन्त प्रयत्नशील थे। हिन्दू समाज से अछूत जातियों को अलग करके उसको दो टुकड़ों में बांट देने की सरकार की जिस मूढ़ योजना को महात्मा गांधी सन् 1931 में दूसरी गोलमेज सभा में समझ पाये थे, स्वामी जी ने अमृतसर कांग्रेस के स्वागताध्यक्ष के भाषण में सन् 1919 में ही इस ओर ध्यान आकृष्ट करते हुए कहा था- लन्दन में भारत की रिफार्म स्कीम-कमेटी के सामने ईसाई मुक्ति फौज के बूथ टकर साहब ने कहा है कि भारत के साढ़े छः करोड़ अछूतों को विशेष अधिकार मिलने चाहिए क्योंकि वे भारत में ब्रिटिश गवर्नमेंट रूपी जहाज के लंगर है। इस वाक्य के कूटनीतिक अर्थ को स्पष्ट करके उन्होंने कहा था- आज से वे साढ़े छः करोड़ हमारे अछूत नहीं रहे बल्कि हमारे बहिन और भाई हैं। उनके पुत्र और पुत्रियां हमारी पाठशालाओं में पढ़ेंगे।

अहमदाबाद में जून 1924 में होने वाले ऑल इण्डिया कांग्रेस कमेटी के अधिवेशन के अवसर पर आपने महात्मा गांधी को भेजे तार में कहा था- कृपा करके अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के प्रान्तीय हिन्दू सभासदों को, जो नौकर रख सकते हैं, कहा जाए कि वे अपनी व्यक्तिगत सेवाओं के लिए जो नौकर रखें, उनमें एक नौकर अवश्य अछूतों में से ही हो। जो ऐसा न कर सके, वह कांग्रेस के अधिकारी न रहे। उन्होंने स्वतन्त्र रूप से दलितोद्धार सभा बनाई और उनका उद्धार करना प्रारम्भ किया।

व्यावहारिक दृष्टिकोण

स्वामी जी का दृष्टिकोण अत्यन्त व्यावहारिक था। सन् 1921 में अखिल भारतीय कांग्रेस कार्यकारिणी ने तीन माह में स्वराज्य-प्राप्ति का लक्ष्य रखा तो आपने स्पष्ट कहा कि इस अवधि में स्वराज्य तो मिलेगा नहीं और उसकी प्रतिक्रिया बहुत बुरी होगी। सन् 1921 तक स्वराज्य न मिलने पर महात्मा गांधी हिमालय चले जाने की बात कहने लगे तो स्वामी जी ने ही उन्हें इस प्रकार की बात कहने से रोका। कोरे सत्याग्रह से स्वराज्य प्राप्ति में आपका किञ्चिन्मात्र विश्वास नहीं था। आप कहा करते थे कि स्वराज्य की प्राप्ति तो भूकम्प के समान किसी अनहोनी घटना से ही होगी। ये विचार आपने कांग्रेस की सत्याग्रह जांच कमेटी के सामने 14 अगस्त 1922 को साक्षी देते हुए कहे थे।

स्वामी जी के मन में देश की स्वतन्त्रता की कितनी ललक थी। यह उनके 25 सितम्बर 1920 को प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री रामकृष्ण जी को लिखे पत्र से प्रकट होती है। वे लिखते हैं- इस समय मेरी सम्मति में असहयोग की व्यवस्था के क्रियात्मक प्रचार पर ही मातृभूमि का भविष्य निर्भर है, यदि यह आन्दोलन अकृत कार्य हुआ और महात्मा गांधी को सहायता न मिले तो देश की स्वतन्त्रता का प्रश्न पचास वर्ष पीछे जा पड़ेगा। इसलिए मैं इस काम में शीघ्र ही लग जाऊँगा।

भारत के स्वतन्त्रता संग्राम का यह महान् योद्धा, भारतीय संस्कृति, शिक्षा, परम्परा का रक्षक, आदर्श सुधारक, आदर्श आचार्य जीवन के अन्तिम क्षण तक स्वयं को समर्पित करता रहा। एक धर्मान्ध मुसलमान की तीन गोलियों को अपने सीने पर झेलकर यह आदर्श कर्मयोगी, दीन-दलितों का उद्धारक, ईश्वर प्रेम में पगा प्यारा, श्रद्धा की साक्षात् प्रतिमा स्वामी श्रद्धानन्द पहले ही सर्वमेघ यज्ञ का उत्कृष्ट यजमान बन अपना मन और धन गुरुकुल के भेंट कर चुके थे, अब सर्वहूत यज्ञ करके तन को भी भेंट चढ़ा दिया।

उनकी मृत्यु का समाचार सुन 'बड़े भाई' की मौत पर 'छोटे भाई' के मुख से निकला- 'शानदार जीवन का शानदार अन्त' महात्मा गांधी ने केवल ये शब्द ही नहीं कहे, अपितु 'यंग इण्डिया' में उनकी लेखनी भी चार-चार आंसू बहाये बिना न रूक सकी। गांधी जी ने लिखा- 'स्वामी जी एक सुधारक थे वे एक वीर सैनिक थे। वीर सैनिक रोग-शय्या पर नहीं किन्तु रणांङ्ण में मरना पसन्द करते हैं। वे वीर के समान जीये और वीर के समान मरे।

- प्रोफेसर एवं निदेशक
श्रद्धानन्द वैदिक शोध संस्थान, हरिद्वार

हमारे सत्संग

पर्वों और त्यौहारों के वास्तविक स्वरूप को पहचानें

आर्य समाज मारतहल्लि, बंगलौर के रविवारीय सत्संग में दिनांक 3 नवम्बर, 2024 को अपने विचार रखते हुए धर्माचार्य श्री रामतीर्थ शास्त्री जी ने कहा कि अभी पिछले दिनों हमने कई त्यौहारों को मनाया। त्यौहार और पर्वों का महत्त्व तभी है जब हम अपने जीवन में उसे धारण करके अपने जीवन को सुधारें। कुछ सुधार हुआ है परन्तु बाहरी रूप में हुआ जबकि आन्तरिक मन में कोई सुधार नहीं दिखाई देता है। हमारे शास्त्र अन्दर की ओर ज्यादा सुधार करने पर जोर देते हैं। यज्ञ का महत्त्व यह होता है कि लोगों के जीवन में खुशहाली आये और राज्य को सुचारू रूप से चलाया जाये। मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीरामचन्द्र जी ने अश्वमेध यज्ञ चलाया था। पहले राजा–महाराज यज्ञ कराया करते थे परन्तु उनका लक्ष्य परोपकार और सेवा की भावना रहती थी। श्रीरामचन्द्र जी ने बालि को मारकर सुग्रीव का राजा बनाया, रावण का बध करके विभीषण को राजा बनाया। वे चाहते तो उस राज्य पर अधिकार कर लेते, परन्तु उन्होंने ऐसा नहीं किया और न ही किसी प्रकार का कोई कर लगाया कि आगे से हमें इतना कर देते रहना। मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीरामचन्द्र जी के गुणों को धारण करना चाहिए। श्रीराम जी के मन में कभी भी यह नहीं आया कि इस सोने की लंका पर राज किया जाये। उन्हें तो वह सोने की लंका जरा भी पसन्द नहीं थी, युद्ध जीतने के बाद भी वे सोने की लंका को देखने तक भी नहीं गये। युद्ध जीतकर जब वे अयोध्या आये तो उन्होंने अश्वमेध यज्ञ किया, उनका मानना था कि हमारा राज्य अश्व की तरह हो। अश्व हमेशा एक पैर खड़ा रहता है, इसका तात्पर्य है कि हमारे राज्य के नागरिक हमेशा कर्त्तव्य पथ पर आगे बढ़ने के लिए तत्पर रहें, प्रगति के लिए दौड़ लगायें। परन्तु हम सभी श्रीराम जी के अयोध्या आने के उपलक्ष्य में दीपक जलाना और पटाखे आदि जलाना ही अपना कर्त्तव्य समझ लिया।

महर्षि दयानन्द जी आते हैं और उन्होंने हमें एक वैदिक मार्ग दिखलाया और वेद मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित किया। स्वामी दयानन्द जी ने जब जन्म लिया था उस समय पूरा समाज कुमार्ग पर चल रहा था, जिस कारण से सनातन धर्म का पतन हुआ। स्वामी जी ने देखा कि मंदिर बना हुआ है और लोग पूजा–पाठ के लिए लाईन लगा रहे हैं और कुछ लोग बाहर से ही प्रणाम करके जा रहे हैं। स्वामी जी ने उनसे पूछा कि तुम लोग बाहर से ही क्यों जा रहे हो तो उन्होंने बताया कि हम अछूत हैं हमें अन्दर जाने की इजाजत नहीं है। कहीं देखा कि लोग भोजन कर रहे हैं परन्तु कुछ लोग दूर से देख रहे हैं परन्तु उन्हें उनके साथ बैठकर भोजन करने का अधिकार नहीं है। ये सारी घटनाएं देखकर स्वामी दयानन्द जी ने उन्हें समान अधिकार और सम्मान दिलाने की ठान ली और उन्होंने आर्य समाज की स्थापना की और समाज में दबे–कुचले लोगों को समाज की मुख्यधारा से जोड़ने का कार्य किया। महिलाओं को उनका हक और अधिकार दिलाने का कार्य किया। स्वामी दयानन्द जी का जब देहावसान हुआ तो उस समय अनेकों दीपक जले थे परन्तु आज आर्य समाज में बहुत अधिक सुधार की आवश्यकता है। आज सार्वदेशिक सभा लेकर, प्रान्तीय सभाओं और आर्य समाज में अनेक विकृतियाँ उत्पन्न हो चुकी हैं जिन्हें सुधारने की आवश्यकता है। जब तक त्याग रूपी तेल नहीं डाली जायेगी तब तक ज्योति ज्यादा दिन तक जल नहीं पायेगी। आज पर्वों और त्यौहारों को मनाने का पूरा प्रारूप बदल चुका है। आवश्यकता है कि त्यौहारों और पर्वों के वास्तविक रूप को समझने की आवश्यकता है। हमें ऋषि–मुनियों के दिखाये गये रास्ते पर चलते हुए वैदिक मार्ग का अनुसरण करना चाहिए। स्वामी दयानन्द जी ने कहा है कि जो वेद पर आधारित हैं उसी को स्वीकार करो और जो वेद विरुद्ध है उसका त्याग करो।

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ही इकलौते ऐसे ऋषि हैं जिन्होंने कोई आश्रम नहीं बनाया। उनका लक्ष्य था कि सत्य को स्वीकार करो और असत्य का त्याग करो, विद्या की वृद्धि करो और अविद्या को दूर करो। हम सभी को पर्वों और त्यौहारों के वास्तविक स्वरूप को पहचानकर वैदिक मार्ग पर चलते हुए अपने जीवन को वैदिक मार्ग पर चलाने का प्रयास करना चाहिए।

आर्य समाज में युवाओं को अधिक से अधिक जोड़ें

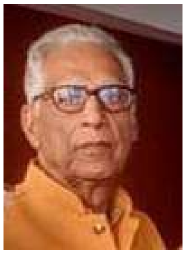

आर्य समाज मारतहल्लि, बंगलौर के रविवारीय सत्संग में दिनांक 10 नवम्बर, 2024 को अपने विचार रखते हुए श्री एस.पी. कुमार जी ने कहा कि वर्तमान में समाज के युवाओं को आगे लाने की आवश्यकता है। यदि देश का युवा आगे आयेगा तभी समाज एवं राष्ट्र का कल्याण हो सकता है। समाज में लोगों की मानसिकता बनी है कि आर्य समाज केवल खण्डन की भूमिका में अधिक रहता है जिस कारण से लोग हम सभी से दूरी बनाते हैं। हम सभी को चाहिए कि केवल खंडन ही नहीं करें बल्कि समाज में जो अच्छे कार्य होते हैं उनका मंडन भी करना चाहिए।

आर्य समाज में लोगों के न जुड़ने का मुख्य कारण यह भी है कि आर्य समाज में खण्डन अधिक है जिस कारण से लोग कटते हैं। उन्होंने कहा कि हमारी सोच हमेशा यह रहती है कि इस आर्य समाज में युवा अधिक से अधिक आएं और उन्हें हम संस्कारित करने का प्रयास करते हैं।

उन्होंने कहा कि हमें प्रत्येक भाषाओं का सम्मान करना चाहिए हिन्दी के अलावा अन्य भाषाओं में भी साहित्य का प्रकाशन होना आवश्यक है। क्योंकि हिन्दी का प्रचलन ज्यादातर उत्तर भारत में ही है, इसलिए अंग्रेजी तथा दक्षिण भारत की अन्य भाषाओं में भी हमें महर्षि दयानन्द जी के विचारों को पहुंचाने के लिए छोटे–छोटे टैक्ट प्रकाशित करके वितरित करने का कार्य करना चाहिए। हमें क्षेत्रवाद, भाषावाद पर विवाद न करते हुए संगठित होकर सभी भाषा और सभी धर्मों का सम्मान करते हुए सभी का साथ लेकर आगे बढ़ने की आवश्यकता है। आर्य समाज संगठन को मत, पंथ, सम्प्रदाय नहीं है बल्कि यह मानवता के कल्याण की भावना से कार्य करता है और हम सभी को उसी भावना एवं विचारों के अनुरूप समाज में कार्य करते हुए राष्ट्र की उन्नति के लिए कार्य करना चाहिए। उन्होंने बताया कि विगत कुछ वर्षों में आर्य समाज में शिथिलता आ गई थी, परन्तु अब फिर से सभी लोग संगठित होकर आर्य समाज की विचारधारा को आगे बढ़ने का प्रयास कर रहे हैं। सभी आर्यजनों को एकजुट होकर महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के विचारों एवं सिद्धान्तों को आगे बढ़ाने के लिए कार्य करना चाहिए। आर्य समाज में अधिक से अधिक युवाओं को जोड़ने का प्रयास करना चाहिए। बड़े–बुजुर्गों का सम्मान हो और युवाओं को कार्य करने का मौका दिया जाना चाहिए, जब आर्य समाज में युवा जुडेंगे तभी हम महर्षि के सपनों को साकार कर पाने में सक्षम हो सकेंगे। क्योंकि किसी भी राष्ट्र की उन्नति में युवाओं का सबसे बड़ा योगदान होता है। युवाओं में कार्य करने क्षमता अधिक होती है। इसलिए आर्य समाज में बैठे हुए पदाधिकारियों को चाहिए कि अपने–अपने समाज में युवाओं को अधिक से अधिक जोड़ें और उन्हें संस्कारित करते हुए उन्हें कार्य करने का मौका दें। यदि इस प्रकार का कार्य प्रत्येक आर्य समाज में होने लगेगा तो वह दिन दूर नहीं जब हम महर्षि के विचारों को जन–जन तक न पहुँचा सकें।

अविद्या के कारण ही मनुष्य ईश्वर की खोज में दर–दर भटक रहा है

आर्य समाज मारतहल्लि, बंगलौर के रविवारीय सत्संग में दिनांक 17 नवम्बर, 2024 को अपने विचार रखते हुए वैदिक विद्वान् श्री रवि भटनागर जी ने कहा आज वर्तमान समय में लोग धर्म को समझते ही नहीं। धर्म के नाम पर पाखण्ड और ढोंग में फंसते चले जा रहे हैं। एक भजन के माध्यम से ईश्वर के सम्बन्ध में बताते हुए कहा कि लोग ईश्वर को मूर्ति में मानकर कोई घण्टी बजाकर, कोई दिया दिखाकर, कोई नाच–गाना करके तथा अन्य माध्यमों के द्वारा ईश्वर को रिझाने का प्रयास करते हैं और इसी की आड़ में कई बार लोग गलत कार्य करने लगते हैं और जेल की सलाखों के पीछे भी चले जाते हैं। उन्होंने कहा कि आज की वस्तुस्थिति है कि ज्यादातर लोग ईश्वर को मानते तो हैं परन्तु जानते नहीं हैं। यही सबसे बड़ी समस्या बनी हुई है। जब तक आप किसी को जानते नहीं हैं तो उसे मानते कैसे हैं, यह एक यक्ष प्रश्न है।

श्री भटनागर जी ने कहा कि आर्य समाज में जब व्यक्ति आता है तो यहाँ आकर जब वह आर्य समाज का पहला नियम पढ़ता है तो उसे ईश्वर के सम्बन्ध में पूर्ण ज्ञान होने लगता है। इसी प्रकार से आर्य समाज के दूसरे नियम में उसे ज्ञान हो जाता है कि हमें किसकी पूजा करनी चाहिए। ईश्वर सर्वव्यापक है, सर्वअन्तरयामी है। परन्तु आज लोगों ने ईश्वर को जगह–जगह मूर्ति बनाकर विराजमान कर दिया जिसका नतीजा यह हो रहा है कि लोग चारों तरफ भटक रहे हैं।

एक कहानी बताते हुए कहा कि एक व्यक्ति की पत्नी खो गई थी, वह ढूंढ़ते हुए पोस्ट ऑफिस पहुंचा और पोस्ट मास्टर से कहा कि मेरी पत्नी को खोज दें तो उस पोस्ट मास्टर ने कहा कि हम यह कार्य नहीं करते यदि आपके पास पता हो तो हम उनके पास पत्र भिजवा सकते हैं, इतनी आपकी मदद कर सकते हैं। पोस्ट ऑफिस के सामने इनकम टैक्स की ऑफिस थी वह व्यक्ति वहां पहुंचा और अधिकारियों से कहने लगा कि हमारी पत्नी को खोज दीजिए तो वहां के अधिकारियों ने कहा कि हम ऐसे लोगों को नहीं खोजते बल्कि हम ऐसे लोगों को खोजते हैं जिनकी आय टैक्स देने लायक होती है। उन्हें ढूंढ़ कर हम टैक्स की वसूली करके सरकारी खजाने को बढ़ाते हैं। वह व्यक्ति बोला कि साहब इससे पहले भी मेरी पत्नी खो गई थी जिसकी सूचना हमने पुलिस को दी थी तो उन्होंने एक मेले से खोजकर लाकर दे दिया था, इस पर इनकम टैक्स के अधिकारियों ने कहा कि तो थाने क्यों नहीं जाते हो, इस वह व्यक्ति कहा कि साहब थाने जाते हुए डर लगता है तो उस अधिकारी ने पूछा क्यों, डर क्यों लगता है तो उस व्यक्ति ने बताया कि पहली बार जब पुलिस के पास गया था तो हमारे पास पत्नी की फोटो थी, परन्तु अब हमारे पास पत्नी की कोई फोटो नहीं है, पुलिस वालों को हम क्या दिखायेंगे। बिल्कुल यही स्थिति आज लोगों की है कि ईश्वर को जगह–जगह चकाचौंध में ढूंढ़ रहे हैं, कभी किसी देव स्थान जाते हैं, कभी कहीं जाते हैं। ईश्वर की खोज में जगह–जगह घूमते–घूमते हमारी प्रवृत्ति भी बदल जाती है। तीर्थ यात्रा की एक कहानी बाते हुए कहा कि अभी हाल ही में कुछ सज्जन पार्क में बैठकर तीर्थ यात्रा की कहानियां बता रहे थे और कह रहे थे कि वहाँ पर एक दुकान है जिसके समोसे बहुत बढ़िया थे, कोई कहता है कि रोड कितनी बढ़िया बन गई है, कोई कहता है कि एयरपोर्ट कितना सुन्दर दिख रहा था, वहां के धर्मशाला बहुत सुन्दर थे। कहने का तात्पर्य है कि आज लोग ईश्वर के तो दर्शन करने जाते हैं, परन्तु ईश्वर से उनका लगाव नहीं रहता, बल्कि आधुनिक चकाचौंध में लगा रहता है।

श्री भटनागर जी ने कहा कि एक बार हमसे कोई व्यक्ति कह रहे थे कि मंदिर चलें तो हमने उन्हें बताया कि हम मंदिर में चल रहे पाखण्डों का विरोध करते हैं, जबकि मंदिरों की रक्षा करने में आर्य समाज और आर्य समाज के लाखों कार्यकर्ताओं ने प्राण पण से अपना योगदान किया है। आर्य समाज सच्चे ईश्वर की बात करता है। समाज में फैले हुए पाखण्ड और अन्धविश्वास का विरोध करता है। मनुष्य को सच्चा राह दिखाने का कार्य आर्य समाज सदैव से करता रहा है। उन्होंने लोगों से आह्वान किया आप सभी सच्चे ईश्वर की उपासना करें, वही आपका उपकार कर सकता है। हम सभी को पहले ईश्वर को जानना चाहिए फिर मानना चाहिए उसके बाद ही उसकी पूजा–अर्चना करनी चाहिए।

ईश्वर ही सबका सच्चा मित्र है

आर्य समाज मारतहल्लि, बंगलौर के रविवारीय सत्संग में दिनांक 24 नवम्बर, 2024 को अपने विचार रखते हुए धर्माचार्य श्री रामतीर्थ शास्त्री जी ने कहा कि जब हम विचार करते हैं तो यही मन में विचार उठता है कि अन्दर भी शान्ति हो और बाहर भी शान्ति हो। जिनको हम जानते हैं या नहीं जानते हों हमारा सदैव यही विचार रहता है कि किसी का कोई नुकसान न हो। सबका कल्याण हो। हमारी सबसे बड़ी प्राथमिकता यही होनी चाहिए और इसके लिए सभी को प्रयासरत रहना चाहिए। उन्होंने कहा कि हमारे वेद कहते हैं कि सबके साथ मित्रवत व्यवहार रखें, सभी के कल्याण की भावना से कार्य करें। यदि हमारे हजार मित्र हों और सभी को कुछ न कुछ परेशानी हो तो ऐसी स्थिति में थोड़ी सी कठिनाईयाँ होती हैं, परन्तु यदि उनका सहयोग नहीं कर सकते तो मित्रता तो नहीं रखनी चाहिए। यदि मित्रता निभाना कठिन है तो शत्रुता को भी झेल पाना बहुत मुश्किल होता है। यदि मित्रता और शत्रुता नहीं रख सकते तो क्या उदासीनता रख सकते हैं। मित्रता और शत्रुता से उदासीनता रख पाना इन दोनों से भी कठिन है। उदासीनता सबसे कठिन है, इसमें जीवन नर्क बन जाता है। मित्र वह होता है जहाँ पर परस्पर प्रीति हो, स्नेह हो। ईश्वर ही सभी का सच्चा मित्र होता है। वही सभी प्राणियों के प्रति दया का भाव रखने वाला होता है, इसीलिए वह सच्चा मित्र है। हम सभी को ईश्वर के गुणों को अपने जीवन में धारण करना चाहिए।

आचार्य जी ने कहा कि जब हम नये जोड़ों का विवाह होता है तो कुछ दिन ठीक चलते हैं उसके बाद कुछ महीनों में लड़ने–झगड़ने लगते हैं, जबकि जब दाम्पत्य जीवन में बंधते हैं तो कहते हैं कि ईश्वर ने जोड़ी बनाई है। ईश्वर सभी का आधार है, क्योंकि वह सर्वाधार है। ईश्वर सभी को अपने में समेटे हुए है। उसी प्रकार से हम सभी को अपने–अपने विचारों दृढ़ रहना चाहिए। जब हम एक–दूसरे की छोटी–छोटी बातों से दूरी बनाने लगते हैं तो दूरियाँ बढ़ने लगती है और हम एक दूसरे से बैर भाव रखने लगते हैं। इसलिए हम सभी एक दूसरे की छोटी–छोटी बातों को नजरअंदाज करते हुए जीवन यापन करना चाहिए। सामाजिक ताने–बाने में ज्यादातर लोग अपने सजातीय वर्ग में मित्रता बनाते हैं जबकि वेद ने कहा है कि विचारों के आधार पर मित्रता हो सकती है। संसार में कोई छोटा–बड़ा नहीं होता है। व्यक्ति विचारों से यदि अच्छा है तो उससे मित्रता हो सकती है। जन्म से कोई छोटा–बड़ा नहीं होता है, मनुष्य विचारों से छोटा–बड़ा होता है। हम सभी को इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि यदि किसी व्यक्ति के अच्छे विचार हैं तो हमें उसे ग्रहण करना चाहिए।

सांसारिक जीवन में अधिकांश लोग यही सोचते हैं कि मैं तो ठीक कर रहा हूँ, सामने वाला गलत है। मैं मेहनत से कमाई कर रहा हूँ परन्तु सामने वाला तो बेईमानी और गलत रास्ते पर चलकर कमाई कर रहा हैं तो ऐसी स्थिति में हमारे मन में ईर्ष्या, द्वेष उत्पन्न होती है। इसी तरह से देशों का मसला है जब कोई देश दूसरे देशों से ईर्ष्या रखकर कार्य करता है तो उसे युद्ध लड़ना पड़ता है जिसका परिणाम हम सभी को मालूम है कि युद्ध से जो हानि होती है, उसकी पूर्ति कभी भी नहीं हो सकती। इसीलिए वेद का मन्त्र कहता है कि सभी मनुष्यों के साथ–साथ सभी जीव–जन्तुओं के साथ मित्रवत व्यवहार रखना चाहिए। जब मनुष्य वेद मंत्रों को पढ़ेंगे तो वह कभी ऐसा कार्य नहीं करेंगे जिससे किसी भी जीव की हानि हो। हम सभी को हमेशा इस बात पर विशेष बल देना चाहिए कि हमारा कोई शत्रु न हो। चारों दिशाओं में मित्रता हो, हम एक–दूसरे का सहयोग करते हुए आगे बढ़ें। इस प्रकार का व्यवहार जीवन में धारण करने से पूरे समाज और संसार में शांति का भाव पैदा होगा।

ओ३म्
पवित्र वेद
स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम
जुड़ने के लिए
कदम-1 अपने फोन में प्ले-स्टोर खोलकर टेलीग्राम डाउनलोड करें।
कदम-2 खोजें HOLY VEDAS @ Parmarth
कदम-3 इस ग्रुप को खोलें और श्रवपद बटन पर क्लिक करें।
कदम-4 इस ग्रुप का हैडर खोलें। ।कक डमउइमते के माध्यम से अपने सभी सम्पर्क वाले लोगों को इस ग्रुप में जोड़ दें।
विमल वधावन योगाचार्य 091.99683 57171
गायत्री योगाचार्या 091.93 12611898

ऋग्वेद-1.4.3

अथा॑ ते॒ अन्त॑मानां वि॒द्याम॑ सुम॒तीना॑म्।
मा नो॒ अति॑ख्य॒ आग॑हि।।3।।

अथा - इसके बाद

ते - आपके

अन्तमानाम् - अत्यन्त निकट, आपको हृदय में महसूस करने वाले

विद्याम - आपको जानने में सक्षम

सुमतीनाम् - श्रेष्ठ आचरण करने वाले

मा - ना

नो - हमारे लिए

अतिख्य - अपनी निकटता, अपने ज्ञान और श्रेष्ठताओं को रोकें

आगहि - कृपया अपनी उपस्थिति तथा अनुभूति से हमारे आन्तरिक जीवन को प्रकाशित करें।

व्याख्या :-

अन्य महानु पुरुषों की तरह आप किस प्रकार महान बन सकते हैं?

अनेकों ऐसे महान ऋषि और सन्त हुए हैं जिन्होंने परमात्मा की उपस्थिति को अपने अत्यन्त निकट, अपने आन्तरिक जीवन में अनुभूति के रूप में अनुभव किया। वे परमात्मा को जानने में सक्षम थे। उन्होंने महान श्रेष्ठ आचरण का व्यवहार दिखाया। इसी प्रकार हम भी परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि ऐसी भावनाओं, ज्ञान तथा शुभ गुणों को हमारे पास आने से न रोकें। हम भी ब्रह्माण्ड की उस सर्वोच्च शक्ति, परमात्मा की अनुभूति प्राप्त कर सकते हैं। हमें उन्हीं महान ऋषियों और सन्तों का अनुसरण करना होगा जिन्होंने परमात्मा की अनुभूति प्राप्त की थी।

(1) हमें अपने बल पर वह सब प्रयास करने चाहिए जिससे हम उन महान लोगों के गुणों को अपने अन्दर धारण कर सकें।

(2) ऐसे महान लोगों की संगति से हमें मार्गदर्शन तथा सहायता प्राप्त करनी चाहिए।

जीवन में सार्थकता

भौतिक तथा सामाजिक जीवन में ऊँचाईयों को किस प्रकार प्राप्त किया जा सकता है?

भगवान की अनुभूति प्राप्त करने के दो माध्यम हैं :-

(1) सीधी अनुभूति

(2) महान लोगों की संगति, वेद आदि महान ग्रन्थों का क्रियात्मक रूप से अनुसरण करना।

इसी सिद्धान्त का अनुसरण भौतिक और सामाजिक उन्नति के लिए भी किया जा सकता है :-

(1) अपनी योग्यताओं, क्षमताओं तथा अवस्था के अनुसार जहाँ कहीं सम्भव हो समाज की सीधी सेवा प्रारम्भ कर दो।

(2) दूसरों की सेवा करने के क्षेत्र में जो लोग पहले ही ऊँचाईयों पर पहुँच चुके हैं उनसे मार्ग दर्शन तथा सहायता प्राप्त करो।

आपके जीवन का लक्ष्य निश्चित रूप से अपने क्षेत्र में ऊँचाईयों को छूना ही होना चाहिए।

Rigveda-1.4.3

अथा॑ ते॒ अन्त॑मानां वि॒द्याम॑ सुम॒तीना॑म्।
मा नो॒ अति॑ख्य॒ आग॑हि।।3।।

Athaa te antamaanam vidyaama sumatinaam
Maa no atikhya aagahi.

Athaa : Hence

te : Your

antamaanam : very close, feeling You in their heart

vidyaama : competent to know You

sumatinaam : behaving in a noble way

maa : please don't

no : for us

atikhya : stop Your closeness, Your knowledge and virtues

aagahi : You please enlighten our inner life also with your presence and realisation

Elucidation

How can you become great like other great men?

There were great rishis and saints who realised the presence of God very close to them, in their inner life. They were competent to know Him. They behaved in a great noble way. Similarly we also pray to God - not to stop such feelings, knowledge and virtues from us. We too can realise God, the Divine Power of the universe. We will have to follow those rishis and saints who realised God.

(i) We must make efforts at our own by adopting all such qualities of great men,

(ii) We must seek guidance and support from the company of such great men.

Practical Utility in life

How to touch heights in material and social life?

There are two ways to realise God :

(i) Direct perception,

(ii) Company of great men, practically following great scriptures like Vedas.

You can follow the same principle for material and social progress also :

(i) Start serving the society directly wherever possible according to your capabilities, capacity and position.

(ii) Seek the guidance and support of those who are already at the height of serving others.

Your destination in life certainly should be to touch the height in your respective field.

AUM

Arya Samaj Marathahalli

(Kundanalahalli, ITPL Road, Bengaluru-560037)

Contact - 9342254131

150th Year of the Foundation of Arya Samaj

SAM VEDA PRAYANA YAJNA

(Brahmacharinis of Maitre Kanya Gurukul, Laksar, Haridwar under the guidance of Vedic scholar Dr. Savita Devi will perform this Yajna with all mantras of Sam Veda, the songs of worship.)

Venue

Sri Bhoo Nila Sametha Sri Venkataramana Swami Temple, BEML, LAYOUT, Bengaluru-560066

Dates

13th, 14th & 15th December, 2024 (Friday, Saturday & Sunday)

13th December, 2024 (Friday)
8 am to 12.30 pm Yajna
(Prasadam distribution from 9 am onwards)
4 pm to 7.30 pm Yajna
(Prasadam distribution from 5 pm onwards)

14th December, 2024 (Saturday)
8 am to 12.30 pm Yajna
(Prasadam distribution from 9 am onwards)

15th December, 2024 (Sunday)
8 am to 10 am Yajna (Prasadam distribution from 9 am onwards) **10 am to 1 pm - Preaching Session**

SPIRITUALITY TO ETERNITY

BEGINNING OF A DIVINE MOVEMENT

GLOBAL SPIRITUAL BHARAT

(Learn to spiritualize your life with meditational practices for a complete human personality inspiring others also and to proceed to realise GOD in the present life itself.)

Chief Guest
Mahamandaleshwar Swami Jitenderananda Saraswati ji
Manav Kalyan Ashram, Mumbai

Presided over by
Swami Bhaktananda Saraswati ji
Begetter of the Vedic Pedia

Chief Speaker
Respected Shri S.Jairam ji
Chairman, J.K.Group

Stage Convener
Fakire Dayanand S.P.Kumar
Chairman, ASMCT

Rishi Langer (Lunch Prasadam) at 1 pm

Vote of Thanks
Col. H.C.Sharma,
President of ASM

Special Attractions

1. GLOBAL SPIRITUAL BHARAT is a divine movement to begin a meditational life. Registrants in this movement will be awarded a beautiful portrait certificate on 15th December, 2024.
2. Satyarth Prakash, the Spot Light on Truth, is the magnum opus of Maharishi Dayananda Saraswati, the great patriotic saint of 20th century. A complete audio recording of 'Satyartha Prakasha' will be made available free of cost by transfer to mobile or email or to your own pendrive.
3. A complete audio recording of Sam Veda chantigs' will be made available free of cost after the programme by transfer to mobile or email or to your own pendrive.

Organising Team

Yogesh Arora
96119 22110
(For registration to get recording of Sam Veda Chantings)

Amrendra Arya
95133 07438
(For registration to get audio recording of Satyartha Prakasha)

Mahesh Ishapnani
81476 21450
(For registration in GLOBAL SPIRITUAL MOVEMENT)

(For any other enquiry or assistance)

Kumar Abhimanyu
80733 03088

Sushil Gupta
94828 94076

Manoj Patni
98440 87424

पृष्ठ 1 का शेष

श्री विमल वधावन योगाचार्य जी संन्यास लेकर बनें स्वामी भक्तानन्द सरस्वती

अनुपम उदाहरण प्रस्तुत किया है। बेटियों के विवाह के उपरान्त अपनी माँ की सेवा अन्तिम सांस तक एक सुयोग्य सुपुत्र/सुपुत्री एवं बहू के रूप में निभाया। इन्होंने अपनी माँ की सेवा एवं सुश्रुसा जिस तरह से किया है वह शायद ही इस कलियुग में कोई भी सुपुत्र कर पाये। इनके जीवन के कार्यों को देखकर हृदय गदगद हो जाता है और गला रूंध जाता है। माँ के चले जाने के बाद इन्होंने अपना पूरा जीवन वेद माता को समर्पित करके 'वेद स्वाध्याय' में लग गये और धीरे–धीरे करके अपने सारे कानूनी कार्यों को छोड़कर पूर्ण रूप से वेद स्वाध्याय एवं ईश्वरभक्ति में लग गये।

पेशे से वकील होने के नाते आर्य समाज तथा समाज के लिए लड़ते रहे। कई बार तो अपने स्वयं के पैसों से समाज एवं परिवारों में बेटियों पर हो रहे अत्याचारों के मुकदमों को लड़ा और उन्हें न्याय दिलाने का कार्य किया। ऐसे महान् व्यक्तित्व के धनी महापुरुष देखने में कम ही मिलते हैं।

इन्होंने अपने जीवन में कई पुस्तकों का भी लेखन किया। श्री विमल जी का बड़े–बड़े राजनीतिज्ञों से भी मधुर सम्बन्ध हैं। ये चाहते तो आधुनिक ऐशो आराम की जिन्दगी जी सकते थे, खूब पैसा कमा सकते थे परन्तु इन्होंने ऐसा न करते हुए अपना पूरा जीवन पूर्ण सादगी भरा जिया और अपनी सम्पत्तियों से परोपकार एवं सेवा के कार्य करते रहे और उसे भी परमात्मा की सम्पत्ति मानकर खर्च किया करते थे। ऐसे महापुरुष के जीवन में अनेक त्यागी, तपस्वी, संन्यासियों, विद्वानों, विदुषी बहनों तथा आर्य नेताओं एवं कार्यकर्ताओं का सान्निध्य एवं सहयोग रहा है।

श्री विमल वधावन जी ने आर्य समाज को अपनी माँ मानकर कार्य करते रहे और महर्षि दयानन्द जी द्वारा दिखाये गये रास्ते पर चलकर आर्य समाज की शिरोमणि सभा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के अनेक पदों पर रहते हुए समाज एवं राष्ट्र के लिए अनेक कार्य किये हैं। उनका व्यक्तित्व एवं कृतित्व एक खुली किताब की तरह है। उन्होंने कभी भी पद को महत्त्व नहीं दिया और हमेशा आर्य समाज एवं वैदिक धर्म के प्रचार–प्रसार के लिए अपना जीवन लगा रखा है। जब कभी भी वैदिक मान्यताओं पर किसी ने अंगुली उठाई तो ये तुरन्त उठ खड़े होते हैं। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी द्वारा रचित अमर ग्रन्थ 'सत्यार्थ प्रकाश' पर अनर्गल टिप्पणी को चुनौती देकर विजय प्राप्त किया जो आर्य समाज के लिए एक गौरव का विषय है।

ऐसे निष्ठावान, कर्मठ तथा आदर्श आर्य नेता ने दशहरा के दिन 12 अक्टूबर, 2024 (शनिवार) को परमार्थ निकेतन, ऋषिकेश, उत्तराखण्ड की देव भूमि पर संन्यास की दीक्षा ली। श्री विमल वधावन जी संन्यास लेने के बाद स्वामी भक्तानन्द सरस्वती बनें। स्वामी भक्तानन्द जी ने संन्यास की दीक्षा अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी से प्रेरित होकर उनके द्वारा दिखाये गये मार्ग पर चलते हुए संन्यास के सारे नियमों का पालन करते हुए संन्यास की दीक्षा सर्वशक्तिमान ईश्वर से ली। संन्यास के वस्त्र आदि का कार्यक्रम इनकी बड़ी बेटी के सुपुत्र चि. रुद्र ने धारण करवाया।

स्वामी भक्तानन्द सरस्वती जी के जीवन को देखकर हमें अत्यन्त हर्ष एवं प्रसन्नता होती है। हम अपना सौभाग्य समझते हैं कि उनका मार्गदर्शन एवं आध्यात्मिक सहयोग हमें प्राप्त होता है। स्वामी भक्तानन्द जी 'वेद स्वाध्याय' के माध्यम से वेद मंत्रों का सरल अनुवाद करके विश्व के कई देशों में उपलब्ध करा रहे हैं जिसका लाभ सामान्य जनमानस को प्राप्त हो रहा है। स्वामी भक्तानन्द सरस्वती जी एक बड़ा कार्य करने जा रहे हैं, वेद स्वाध्याय के लिए एक 'वैदिक पीडिया' का एप तैयार करा रहे हैं जिससे भविष्य में वेद से सम्बन्धित ज्ञान सरल रूप में संसार के मनुष्यों को निःशुल्क प्राप्त होता रहेगा। हम सभी को उनका सहयोग एवं समर्थन करना चाहिए। हम आर्य समाज मारतहल्लि, बंगलौर की ओर से स्वामी भक्तानन्द जी सरस्वती के उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हुए बधाई एवं शुभकामनाएं देते हैं।

शुगर की आयुर्वैदिक औषधि का निःशुल्क वितरण

प्रत्येक रविवार को सत्संग के पश्चात् दोपहर 12 बजे से आर्य समाज भवन में शुगर की आयुर्वैदिक औषधि का निःशुल्क वितरण होता है। कृपया प्रातःकालीन समय में खाली पेट शुगर माप कर आयें।

Free Ayurvedic Eye Drops

Very costly drops prepared with medicinal water of Holy Mother Ganga, Saffron and other material. Made available with courtesy of Shri Subhash Garg ji.

फकीरे दयानन्द (एस पी कुमार)
9342254131

विमल वधावन योगाचार्य
9968357171